स्मारिका

प्रेरणा विमर्श-2021

(भारतोदय: आजादी का अमृत महोत्सव)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, सी-56/20 सैक्टर-62, नोएडा, दूरभाष:- 0120 4565851, ईमेल- prernashodh@gmail.com

प्रदर्शनी

प्रदर्शनी

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा द्वारा आयोजित 24, 25 एवं 26 दिसम्बर 2022 को 'प्रेरणा विमर्श-2021' (भारतोदय: आजादी का अमृत महोत्सव) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय 'भारतोदय एवं मीडिया' था। इसमें प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिष्ठित पत्रकार, सोशल मीडिया के जानकार एवं सोशल मीडिया में सक्रिय लोग, बुद्धिजीवी, पत्रकारिता के विद्यार्थी, अध्यापक और लेखकों ने भागीदारी की। कार्यक्रम के पहले दिन 24 दिसम्बर को सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दूसरे दिन 25 दिसम्बर को पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला एवं तीसरे दिन-26 दिसम्बर को पत्रकारिता के विद्याथी एवं शिक्षक विमर्श कार्यशाला और समापन अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इसके अलावा तीनों दिन 24, 25 एवं 26 दिसम्बर को प्रेरणा चित्र भारती ऑनलाइन फिल्मोत्सव भी आयोजित किया गया।

प्रेरणा विमर्श -2021 आयोजन समिति

अध्यक्ष - मधुसूदन दादू जी
संयोजक -डॉ. अनिल त्यागी जी
सह संयोजक - डॉ. प्रशांत कुमार जी
संयोजक (प्रदर्शनी) - रवि श्रीवास्तव जी
सदस्य (आर्थिक समिति) - अणंज त्यागी जी
संयोजक, सोशल मीडिया कार्यशाला - मुकेश गुप्ता जी
सह संयोजक, सोशल मीडिया कार्यशाला - पंकज राज जी
संयोजक, पत्रकार-लेखक विमर्श कार्यशाला - श्याम किशोर जी
सह संयोजक, पत्रकार-लेखक विमर्श कार्यशाला -डॉ. अखिलेश मिश्र
सह संयोजक, पत्रकार-लेखक विमर्श कार्यशाला - विनीत पांडेय जी
संयोजक, मीडिया विद्यार्थी-अध्यापक कार्यशाला - डॉ. अनिल निगम जी
सह संयोजक, मीडिया विद्यार्थी-कार्यशाला - डॉ. हरेन्द्र सिंह जी
संयोजक, प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव - डॉ. मनमोहन सिंह जी
सह संयोजक, प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव - प्रमोद कामत जी
संयोजक, प्रदर्शनी - डॉ. प्रदीप कुमार जी
सह संयोजक, प्रदर्शनी - नीरज कुमार जी
सह संयोजक, प्रदर्शनी - डॉ. सुशील जी
संयोजक, समापन कार्यक्रम -रमन चावला जी

सुरेन्द्र सिंह जी - प्रांत प्रचार प्रमुख
प्रीतम जी - सह प्रांत प्रचार प्रमुख
दिनेश सिंह जी - कार्यालय प्रमुख

सदस्य

बी.के. गुप्ता जी
डॉ. नीलम कुमारी जी
डॉ. प्रियंका सिंह जी
मोनिका चौहान जी
अनीता चौधरी जी
कीर्ति चौहान जी
प्रकाश श्रीवास्तव जी
राम कुमार जी
दिनेश गोयल जी
बलवन्त जी
मनीष गुप्ता जी
शुभ्रांशु जी
सत्येन्द्र सिंह जी
प्रमोद मल्होत्रा जी

भारतोदय : आजादी के अमृत महोत्सव के लिए विमर्श

राष्ट्र अपने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के इस महापर्व के उपलक्ष्य में प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के तत्वावधान में नोएडा के सेक्टर-12 स्थित भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर में 24 से 26 दिसम्बर 2021 तक त्रिदिवसीय प्रेरणा विमर्श-2021 अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रबुद्ध नागरिकों, लेखकों, बुद्धिजीवियों तथा विशेष रूप से पत्रकारों एवं पत्रकारिता की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। नोएडा, मेरठ और गाजियाबाद के लगभग 15 विद्यालयों एव विश्वविद्यालय के तीस शिक्षकों सहित 300 से अधिक विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला से लाभ उठाया। लगभग सौ से अधिक लेखकों, पत्रकारों और सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं ने कार्यशाला में सक्रिय प्रतिभागिता की। इस भव्य अनुष्ठान का उद्घाटन वरिष्ठ पत्रकार उमेश उपाध्याय जी ने माँ सरस्वती एवं माँ भारती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम के पहले दिन सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला पर मंथन हुआ। पराधीनता काल में राष्ट्र की चेतना को जीवंत बनाए रखने हेतु पत्रकारों एवं लेखकों का अतुलनीय योगदान रहा है। प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के प्रयास से वर्तमान मीडिया लेखन, निर्देशन और राष्ट्रहित में उसका उपयोग करने की दृष्टि से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिन सोशल मीडिया के विभिन्न आयामों पर दिनभर तीन अलग-अलग सत्रों में विचार-मंथन हुआ।

सोशल मीडिया का राष्ट्रहित में विमर्श विषय पर सत्र को सम्बोधित करते हुए श्री दिव्य सोती जी ने सोशल मीडिया की बारीकियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज के समय में हमें सोशल मीडिया का उपयोग करने से बारीकियों को समझना होगा। सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार श्री उमेश उपाध्याय जी ने कहा कि सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया देने से पहले सोचिए, समझिए और विचार कीजिए उसके बाद लगता है तो हमें प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र "नए भारत के निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका" विषय पर प्रकाश डालते हुए वरिष्ठ स्तंभकार श्री विकास सारस्वत जी ने कहा यह कहना गलत है कि हम ही राष्ट्रवादी है, जो हमारा विरोध कर रहा है, वह राष्ट्रवादी नहीं है। पत्रकारों को एकपक्षीय होने से बचना चाहिए। सत्र के मुख्य वक्ता ऑर्गेनाइजर के संपादक श्री प्रफुल्ल केतकर जी ने कहा कि नए भारत का निर्माण मोदी और गाँधी का विषय नहीं है। नए भारत का निर्माण हमारे और आज के युवा का विषय है और युवा वर्ग के प्रयास से ही भारत का नव निर्माण सम्भव है।

तृतीय सत्र में संघ और सोशल मीडिया विषय पर चर्चा हुई। इस दौरान उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना आयुक्त श्री सुभाष सिंह जी व अखिल भारतीय सह सोशल मीडिया प्रमुख श्री रोहित कौशल जी ने उपस्थित जनसमूह के समक्ष अपने विचार रखे।

पहले दिन की कार्यशाला का समापन भारतोदय मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा। इस अवसर पर आजादी का अमृत उत्सव विषय पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत माता एवं आदि-पत्रकार नारद जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। प्रदर्शनी को क्रान्तिवीरों-वीरांगनाओं और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले महापुरुषों के चित्रों से सुशोभित किया गया।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला में लेखन तथा लेखकों की समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा की गई। जिसमें अलग-अलग मीडिया संस्थानों के वरिष्ठ पत्रकारों और स्वयंसेवी पत्रकारों ने मार्गदर्शन किया। प्रथम सत्र में संघ परिचय विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में श्री वरिष्ठ लेखक एवं स्तंभकार श्री नरेन्द्र भदौरिया जी ने संघ और समाज विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने समाज में स्वयंसेवकों की भूमिका पर प्रकाश डाला और संघ की कार्य पद्यति के बारे में बताया। वहीं संसद टीवी के सम्पादक श्री श्याम किशोर जी ने

पत्रकार स्वयंसेवक और संघ परिचय विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वयंसेवक पत्रकारों की भूमिका विषय में चर्चा हुई। सत्र के अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो. अखिलेश मिश्र जी ने बताया कि सूचना के अंतरजाल से हमें कैसे निपटना है? यह आज पत्रकारों के समक्ष महत्वपूर्ण एवं बड़ी चुनौती है। अगर हमें अच्छी सूचना या विचारों का आदान-प्रदान करना है तो हमें अध्ययनशील होना पड़ेगा। सत्र के मुख्य वक्ता श्री शंकर सिंह जी ने कहा कि स्वयंसेवक शब्द जुड़ने से पत्रकारिता के क्षेत्र में हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। हमें जहाँ एक ओर पत्रकारिता का कर्त्तव्य भी निभाना है, वहीं स्वयंसेवक की जिम्मेदारी भी हमारे कंधों पर है।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में वरिष्ठ पत्रकार श्री अशोक श्रीवास्तव जी ने वर्तमान पत्रकारों की चुनौतियों पर बात की। उन्होंने कहा कि आज प्रमुख चुनौती वास्तविक खबर दिखाने की है। जब तक हम सही खबर तक पहुँचते हैं तब तक झूठी खबर अपना काम कर चुकी होती है। वहीं वरिष्ठ पत्रकार श्री विष्णुकान्त त्रिपाठी जी ने पत्रकारिता की बारीकियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि यह समय छिपाने का नहीं है कि हम स्वयंसेवक पत्रकार हैं। इसके विपरीत हमें सही चीजों को लोगों के समक्ष निडर होकर रखना चाहिए।

तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में आपातकाल में संघ की भूमिका विषय पर कार्यशाला सम्पन्न हुई। सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. अरुण भगत जी ने आपातकाल में संघ की भूमिका पर अपनी बात रखी और प्रश्न-उत्तर काल में मीडिया के विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को भी सरल-सहज भाषा में दूर किया। प्रो भगत ने कहा कि संघ एक ऐसा संगठन है जो व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है। संघ का काम शाखा लगाना है। लेकिन संघ के स्वयंसेवक प्रत्येक वह काम करते हैं जो राष्ट्र निर्माण और देश के लोगों के लिए आवश्यक है। सत्र की अध्यक्षता कर रहे श्री राजीव तुली जी ने भी आपातकाल में संघ की भूमिका विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संघ अति साधारण व्यक्तियों का अति असाधारण संगठन है, जिसमें स्वयंसेवक प्रत्येक वह काम करता है जो राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति और मीडिया अध्ययन विषय पर चर्चा हुई। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के कुलपति प्रो. संजीव शर्मा जी ने नई शिक्षा नीति की बारीकियों पर बात की। उन्होंने भारतोदय में नई शिक्षा नीति को राष्ट्रीय शिक्षा नीति बताया और कहा कि यह राष्ट्र के निर्माण में बहुत सहायक है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव जी ने भी नई शिक्षा नीति और मीडिया अध्ययन विषय की बारीकियों पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को आगे आकर मुख्यधारा से जुड़ने का आह्वाहन किया, साथ ही किताबें पढ़ने पर जोर दिया।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में आत्मनिर्भरता में मीडिया विद्यार्थियों की भूमिका विषय पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में व श्री हर्षवर्धन त्रिपाठी जी ने आत्मनिर्भरता को भारतीय संस्कृति का हिस्सा बताया बताते हुए कहा कि हमारी संस्कृति में बच्चों को जन्म से ही आत्मनिर्भरता का गुण सिखाया जाता है। सत्र की अध्यक्षता प्रो. सच्चिदानंद जोशी जी सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी कला केंद्र संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने की। उन्होंने नई शिक्षा नीति को विद्यार्थियों और समाज के हित में बताया।

भारतोदय आजादी का अमृत महोत्सव के तीन दिवसीय कार्यक्रम का भव्य समापन प्रेरणा विमर्श स्मारिका-2020 के विमोचन के साथ किया गया। इस अवसर पर स्मारिका के डिजिटल प्रदर्शन को सभी ने सराहा। मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य प्रो. राकेश सिन्हा जी थे। प्रो. राकेश सिन्हा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बलिदान की कोई उम्र नहीं होती, भारतीय इतिहास इसका गवाह है। अनेक क्रान्तिवीरों ने बाल्यावस्था में ही देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना बलिदान दिया है।

प्रेरणा विमर्श- 2021
(भारतोदय : आजादी का अमृत उत्सव)

मीडिया विमर्श के प्रमुख केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के प्रयास से भारतोदय एवं मीडिया विषय को केन्द्र में रखकर 24, 25 एवं 26 दिसम्बर 2021 को भारतोदय: आजादी का अमृत महोत्सव नाम से प्रेरणा विमर्श-2021 का आयोजन किया गया।

□ तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में देश के मूर्धन्य चिंतकों, कई विश्वविद्यालय के कुलपतियों, समाचार-पत्रों के प्रमुख संपादकों, टीवी चैनलों के प्रमुख संपादकों, वरिष्ठ पत्रकारों, सोशल मीडिया के दिग्गजों और फिल्म टेलीविजन के प्रमुख हस्ताक्षरों और सम्मानित जनप्रतिनिधियों को मिलाकर 50 से अधिक अतिथियों ने

प्रेरणा विमर्श को सार्थक बनाया। हर दिन चर्चा सत्र में प्रश्नोत्तर का क्रम रखा गया, जो बहुत रोचक और सफल रहा।

- दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद एवं मेरठ आदि जिलों के प्रतिभागियों ने इस विमर्श में प्रतिभाग किया।

- 24 दिसम्बर को पहले दिन भारतोदय:आजादी का अमृत उत्सव विषय पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत माता एवं आदि-पत्रकार नारद जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। प्रदर्शनी को क्रान्तिवीरों-वीरांगनाओं और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले महापुरुषों के चित्रों से सजाया गया। कार्यक्रम में सम्मिलित होने पहुंचे देश के प्रबुद्ध नागरिकों एवं विद्यार्थियों ने क्रांतिवीरों-वीरांगनाओं एवं महापुरुषों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। स्वाधीनता के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रेरणा विमर्श के द्वारा राष्ट्रीय भावना के संचार हेतु आयोजित इस कार्यक्रम के प्रति सभी में उत्साह दिखाई दिया। प्रदर्शनी को 300 से ज्यादा स्लाइडों के माध्यम से दर्शाया गया, जिसकी प्रतिभागियों और दर्शकों ने खूब प्रशंसा की।

- 24 दिसम्बर को ही सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला को तीन सत्रों में सोशल मीडिया के अलग-अगल आयामों पर चर्चा एवं प्रश्नोत्तर हुए।

- 25 दिसम्बर को दूसरे दिन पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला में मीडिया से जुड़े अलग-अलग आयामों पर पूरे दिन विमर्श चला।

- तीसरे दिन 26 दिसम्बर को पत्रकारिता के विद्यार्थी एवं शिक्षक विमर्श कार्यशाला में पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई।

- तीन दिनों तक चले इस महोत्सव में पत्रकारों, बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त मुख्य रूप से भावी पत्रकार यानी पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने भागीदारी की।

- कार्यक्रम में ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण की व्यवस्था थी जिसमें कुल 1000 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया।

- प्रेरणा चित्र भारती ऑनलाइन फिल्मोत्सव का आयोजन भी किया गया। जिसमें भारत की संस्कृति और युवा, भारतीय धरोहर, सामाजिक समरसता, पर्यावरण और जल संरक्षण, नारी सशक्तिकरण और सुरक्षा आदि विषयों पर 10 मिनट तक की डाक्यूमेंट्री और लघु फिल्में मंगायी गई थीं जिसमें 44 इंट्री आयी। सभी फिल्में दर्शकों को ऑनलाइन दिखाई गईं।

- फिल्मोंत्सव में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

- प्रेरणा विमर्श-2021 का सबसे आकर्षण का केन्द्र रहा इसका समापन कार्यक्रम, जिसमें राज्य सभा सदस्य, प्रो. राकेश सिन्हा जी मुख्य वक्ता एवं महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार के मा. कुलपति प्रो. संजीव शर्मा जी ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

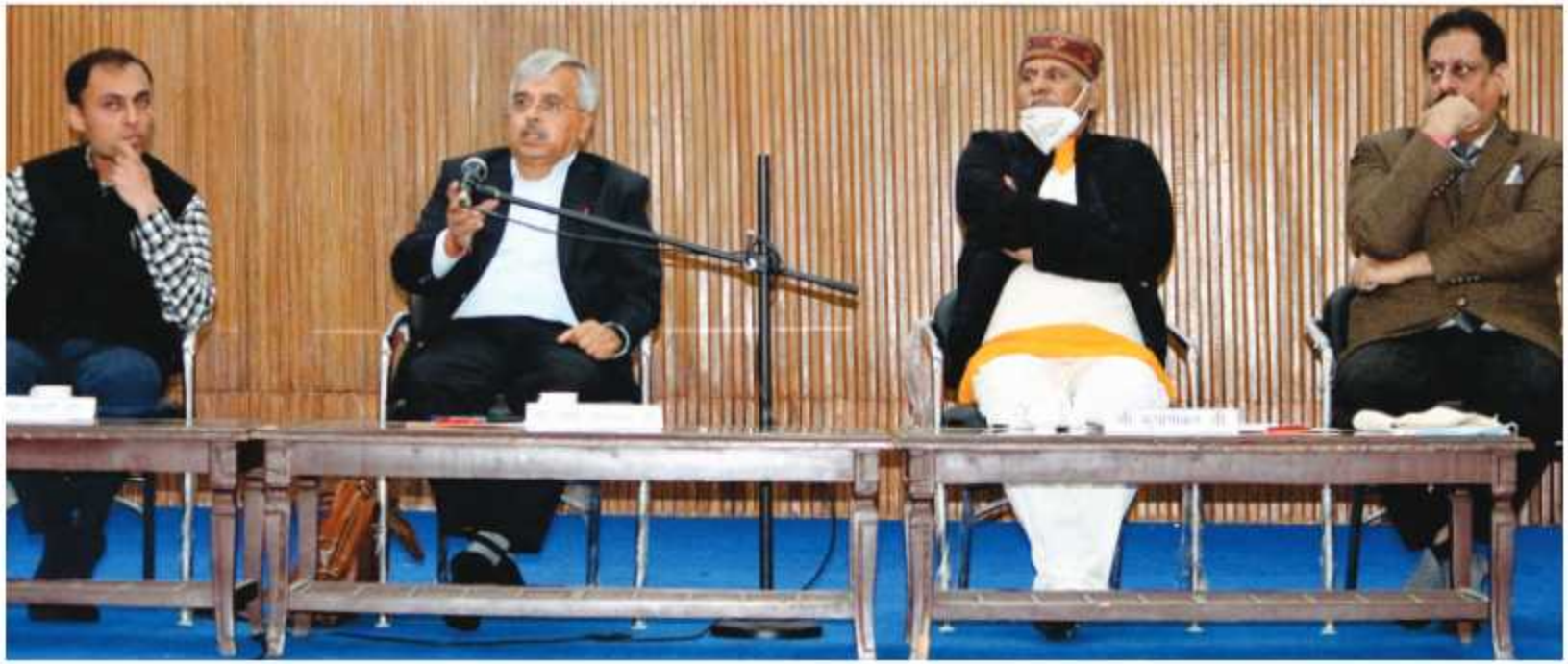

सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला 24 दिसम्बर, 2021 प्रथम सत्र - समय : 1100 बजे से 12.15 बजे तक
विषय : सोशल मीडिया पर राष्ट्रहित में विमर्श

मंचासीन अतिथि श्री दिव्य सोती जी, (स्तम्भ लेखक व टीवी पैनलिस्ट व अधिवक्ता), श्री उमेश उपाध्याय जी (वरिष्ठ पत्रकार एवं रिलायंस इंटस्ट्रीज मीडिया के अध्यक्ष एवं निदेशक), श्री कृपाशंकर जी (प्रचार प्रमुख, उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड)
श्री अणंज त्यागी जी (अध्यक्ष, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास)

प्रेरणा विमर्श-2021 भारतोदय: आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम में पराधीनता काल में राष्ट्र की चेतना को जीवंत बनाए रखने हेतु पत्रकारों एवं लेखकों का अतुलनीय योगदान रहा है। प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के प्रयास से वर्तमान मीडिया लेखन, निर्देशन और राष्ट्र हित में उसका उपयोग करने की दृष्टि से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। पहले दिन सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला पर मंथन हुआ। कार्यशाला के प्रथम सत्र में सोशल मीडिया पर राष्ट्र हित विमर्श विषय पर विचार विमर्श हुआ।

श्री उमेश उपाध्याय जी (वरिष्ठ पत्रकार एवं
रिलायंस इंटस्ट्रीज मीडिया के अध्यक्ष एवं निदेशक)

श्री दिव्य सोती जी,
(स्तम्भ लेखक व टीवी पैनलिस्ट व अधिवक्ता)

सोशल मीडिया पर आई किसी भी पोस्ट पर प्रतिक्रिया देने से पहले सोचिए, समझिए और विचार कीजिए उसके बाद आपको लगता है कि हमें इस पर प्रतिक्रिया देनी चाहिए तो दीजिए। वरना उसे नजर अंदाज कर दीजिए। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया साध्य भी है और साधन भी लेकिन पश्चिमी देशों के लिए यह एक हथियार भी है। पश्चिमी विचार को दुनिया में प्रसारित करने में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सोशल मीडिया में कुछ लिखने और प्रतिक्रिया देने से पहले उस विषय पर शोध अवश्य करना चाहिए। कहीं दूर कर्नाटक के एक चर्च पर किसी विवाद पर एक पत्थर गिरता है और अमेरिका में न्यूयार्क टाइम्स में पांच हजार शब्दों की भारत के अल्पसंख्यक पर एक रिपोर्ट छपती है और फिर अमेरिकी कांग्रेस फ्रीडम ऑफ रिलीजन की रिपोर्ट में इसका जिक्र होता है। यही है हमारे लिए विमर्श। पश्चिम देश के लिए सोशल मीडिया पर इसी विमर्श को आगे बढाने के लिए एक बहुत बड़ा हथियार है।

आज सोशल मीडिया का उपयोग करने से पहले हमें उसकी बारीकियों को समझना होगा। एक घटना का जिक्र करता हूं कि कर्नाटक के किसी गांव में चर्च पर पत्थर मारा गया। एक शीशा टूट गया। यह समाचार सोशल मीडिया पर हेडलाइन बन गया क्योंकि कर्नाटक सरकार मतांतरण विरोधी कानून ला रही है। वहां पर कई दिन पहले से चर्च में लोगों ने बोलना शुरु कर दिया कि यह कानून लाया जा रहा है जिससे हमारे समाज में घृणा फैल रही है। यह जानना होगा कि इस तरह की घटनाएं ग्रामीण इलाकों में बड़ी आम घटना है कि हिंदू मंदिरों की प्रतिमाओं को आए दिन क्षतिग्रस्त कर दिया जाता है। इस प्रकार की हजार खबरें पढ़ेंगे तो पुलिस की ओर से यही बयान होगा कि कोई अर्ध विक्षिप्त व्यक्ति था जो यह कर गया। इस बात को दबाने के लिए पुलिस अथवा प्रशासन अपने पास से ही खर्चा करके प्रतिमा पुन: स्थापित करा देते हैं। यह जो निचले स्तर पर समाचार पत्रों में सीमित है, उसे कहीं ना कहीं राष्ट्रीय स्तर पर आना चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है ज्यादातर ग्लोबल लिफ्ट द्वारा कंट्रोल है। जब कोई घटना होती है तो हमारे विरोधी एक बहुत बड़ा मुद्दा बनाते हैं। परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि हमें भी इसके विरोध में कोई भड़काऊ पोस्ट करनी है।

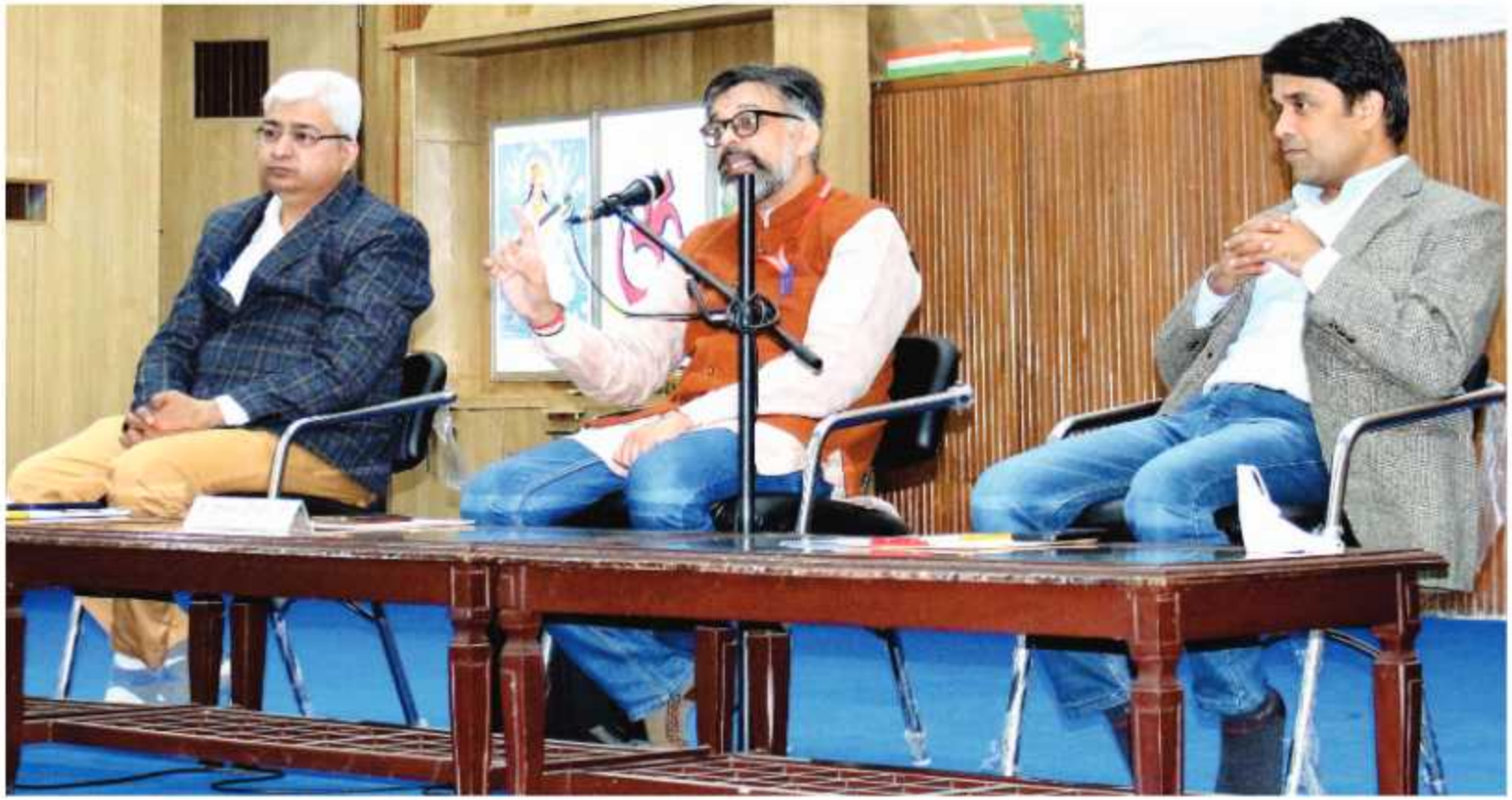

सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला 24 दिसम्बर, 2021 द्वितीय सत्र, समय : 12.45 बजे से 2.00 बजे तक
विषय : नए भारत के निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका

मंचासीन अतिथि श्री विकास सारस्वत जी, (स्तम्भ लेखक, स्वराज मैग्जीन/ दैनिक जागरण),
श्री प्रफुल्ल केतकर जी (संपादक, आर्गनाइजर) श्री मुकेश गुप्ता जी (प्रचार प्रमुख, नोएडा)

श्री प्रफुल्ल केतकर
(संपादक, आर्गनाइजर)

नए भारत का निर्माण मोदी और गाँधी का विषय नहीं है। नए भारत का निर्माण हमारे और आज के युवा का विषय है और युवा वर्ग के प्रयास से ही भारत का नव निर्माण सम्भव है। आज की लड़ाई विचारधारा की लड़ाई है। हमारे बीच विपरीत विचारधारा के लोग भी हैं। आज के समय में 'ही' और 'भी' की लड़ाई है। वे कहते हैं कि हम ही सही हैं और हमारा रास्ता ही सही है। हम कहते हैं कि हम अपने विचारों को किसी पर भी नहीं थोपेंगे। भारत के संदर्भ में हिंदू जीवन के संदर्भ में कोई भी व्याख्या का प्रयास करता है तो उसको तुरंत काउंटर किया जाता है। बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम करने वाले लोग हैं जो काम छोड़कर 2013 और 2014 के बाद रिसर्च और मीडिया के फील्ड में आ गए। नवभारत के निर्माण में इस मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

श्री विकास सारस्वत जी
(स्तम्भ लेखक, स्वराज मैग्जीन/ दैनिक जागरण)

यह कहना गलत है कि हम ही राष्ट्रवादी है, जो हमारा विरोध कर रहा है वह राष्ट्रवादी नहीं है। पत्रकारों को एकपक्षीय होने से बचना चाहिए। हमारे बीच राष्ट्र विरोधी तत्त्व निश्चित ही उनकी संख्या बहुत ही कम है, सक्रिय रहते हैं, हमें उनकी पहचान करनी है। हमारा विरोध करने वाला राष्ट्र विरोधी तत्त्व ही हो यह आवश्यक नहीं है। स्वाध्याय के महत्त्व को वर्तमान पीढ़ी ने पढ़ना छोड़ दिया है और वह सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करने लगी है। हमें तथ्यों को जांचना और परखना आना चाहिए और उसके लिए स्वाध्याय से बढ़कर दूसरा कोई सरल साधन नहीं है। उन्होंने बल दिया कि अपनी राष्ट्रीय विचारधारा को आगे लाने के लिए हमें राष्ट्रीय बोध से पूर्ण साहित्य का अध्ययन करना होगा।

सोशल मीडिया विमर्श कार्यशाला 24 दिसम्बर, 2021 तृतीय सत्र, समय : 2.45 बजे से 4.00 बजे तक
विषय : संघ और सोशल मीडिया

मंचासीन अतिथि श्री सुभाष सिंह जी, (राज्य सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश), श्री रोहित कौशल जी (सह सोशल मीडिया प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) डॉ. अनिल त्यागी जी (संयोजक,प्रेरणा विमर्श-2021), श्री भुवन भास्कर जी (सहायक उपाध्यक्ष, मीडिया और संचार, एनसीडीईएक्स)

श्री भुवन भास्कर जी (सहायक उपाध्यक्ष मीडिया और संचार, एनसीडीईएक्स)

जब सोशल मीडिया अथवा उसके जरिए बातचीत करने की बात हम करते हैं तो बहुत सामान्य शब्द है जो आजकल आप सुनते होंगे और सोशल मीडिया आने के बाद वो शब्द और ज्यादा प्रचलन में है-नैरेटिव। जब पहले सोशल मीडिया का प्रभाव नहीं था, मेनस्ट्रीम मीडिया के कुछ लोग बैठकर नैरेटिव गढ़ते थे। सोशल मीडिया के आने के बाद नैरेटिव गढ़ने का काम मुख्य मीडिया के हाथ से निकल कर समाज के पास आ गया है।

श्री रोहित कौशल जी
(सह सोशल मीडिया प्रमुख, रा.स्व.संघ)

संघ में सोशल मीडिया का दायित्व जिनके पास होता है, उनका सोशल मीडिया पर रहना जरूरी नहीं होता है। सबसे पहले यह तय करना होता है कि सोशल मीडिया संघ में आएगा या संघ को सोशल मीडिया पर आना है। जो लोग भी सोशल मीडिया का दायित्व निभा रहे हैं, उनके लिए संघ को पूरी तरह से समझाना बहुत जरूरी है। अगर आप संघ को पूरी तरह से समझाना चाहते हैं तो ये पूरी जानकारी आपको सिर्फ शाखा में ही मिल सकती है। अगर हम संघ को पूरी तरह से नहीं समझते और संघ को सोशल मीडिया पर लेकर जाते हैं तो आप इससे संघ का नुकसान कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्रचार विभाग का एक भाग है। प्रचार विभाग अपनी चार मुख्य बातों को स्थाई तौर पर समाज में स्थापित करना चाहता है और सोशल मीडिया उसका पूरक है।

श्री सुभाष सिंह जी
(राज्य सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश)

सोशल मीडिया या मीडिया को लेकर हमें प्रतिक्रियावादी नहीं होना चाहिए। हिन्दू कभी भी प्रकृति के प्रति प्रतिक्रियावादी नहीं होता है। लेकिन आजकल हम हो गए हैं। हमारी शिकायत रहती है कि उनकी जनसँख्या बढ़ रही है। हरिद्वार जैसे सनातनी स्थल पर भी वे बड़ी संख्या में आ गए हैं। इसमें उनका दोष नहीं आपका दोष है। आपका अभाव उनके लिए संभावना है। आप पलायनवादी हो गए हैं इसलिए आप संघर्ष कीजिये, अपनी जगह पर बने रहिये, आपका रुकना ही उनके लिए रुकावट है। आज सोशल मीडिया पर भी सामानांतर तौर पर उनका कब्जा है। हमको भी मजबूती के साथ वहां खड़े रहना है। हमें सोशल मीडिया पर वामपंथियों की तरह अभद्र भाषा का इस्तेमाल नहीं करना है। यह हमारा संस्कार नहीं है बल्कि हमें अध्ययन और शोध के साथ तथ्यों के साथ जवाब देना चाहिए।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 25 दिसम्बर, 2021 प्रथम सत्र, समय : 11.00 बजे से 12.15 बजे तक
विषय : संघ परिचय

मंचासीन अतिथि श्री कृपाशंकर जी (प्रचार प्रमुख, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड), श्री नरेन्द्र भदौरिया जी (वरिष्ठ पत्रकार)
श्री श्याम किशोर जी (संपादक, संसद टीवी)

प्रेरणा विमर्श-2021 भारतोदय : आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम में के दूसरे दिन 25 दिसम्बर को पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के प्रथम सत्र में संघ परिचय, द्वितीय सत्र में वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वयंसेवक पत्रकारों की भूमिका एवं तृतीय सत्र प्रश्नोत्तर का रहा।

श्री नरेन्द्र भदौरिया जी
(वरिष्ठ पत्रकार)

नरेन्द्र भदौरिया जी ने संघ और समाज विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने समाज में स्वयंसेवकों की भूमिका पर प्रकाश डाला और संघ की कार्य पद्धति के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संघ प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं करता है किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं है जो संघ न करता हो। उन्होंने कहा कि आज समाज की समस्या यह है कि हम जानते बहुत कुछ हैं पर जानना कुछ नहीं चाहते हैं। उन्होंने कहा कि समाज में जब-जब राष्ट्रीय एकता का भाव कमजोर होगा, तब-तब समाज टूटेगा। समाज सशक्त हो, इसलिए डॉ. हेडगेवार जी ने संघ की स्थापना की। संघ का काम व्यक्ति निर्माण का है। हमारा देश भारत एक राष्ट्र ही नहीं है, यह मन्दिर भी है। हमारी संस्कृति देवत्व की संस्कृति है। हमें अपने अन्दर जानने की कला को विकसित करना चाहिए।

श्री श्याम किशोर जी
(संपादक, संसद टीवी)

संघ से हम सभी का जुड़ाव है और यदि हमसे संघर्ष का परिचय पूछा जाए तो इसका ठीक-ठीक उत्तर नहीं है। कार्यक्रम में आना, शाखा में जाना, लोगों से मिलना, प्रचारकों से मिलना, ये सब प्रकार हैं संघ परिचय के। इसकी कोई सीमा नहीं है कि यह जान लिया तो संघ जान लिया, यह वर्ग कर लिया तो संघ के हो गए या संघमय हो गए। पूजनीय डॉक्टर हेडगेवार जी ने जब संघ की शुरुआत की तो बालकों के साथ शुरुआत की। बाल मन की कोई बहुत बड़ी विचारधारा या संकल्पना नहीं होती। संघ एक आत्मीयता का नाम है। हम जितना भी एक दूसरे से आत्मीय होते हैं, वहां से बात शुरू होती है। हम सभी के अनुभव में आया होगा कि हम जिनके संपर्क में आए। किसी कार्यकर्ता के संपर्क में आए, प्रचारकों के संपर्क में आए तो किसी विचार को लेकर वह संपर्क गहरा नहीं होता, वहां तो शुद्ध आत्मीयता है, और जब आप वहां के हो जाते हैं तो पता चलता है कि कोई विचारधारा भी है, कोई इस तरह का कार्य भी है लेकिन मूल वही है जो आत्मीयता का सूत्र है।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 25 दिसम्बर, 2021 द्वितीय सत्र - समय : 12.45 बजे से 2.00 बजे तक
विषय : वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वयंसेवक पत्रकारों की भूमिका

मंचासीन अतिथि श्री सुरेन्द्र सिंह जी (प्रान्त प्रचार प्रमुख, मेरठ), श्री शंकर सिंह जी (सहायक संपादक, नवभारत टाइम्स), प्रो. अखिलेश मिश्र जी (प्राचार्य, शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद), श्री मधुसूदन दादू जी (अध्यक्ष, प्रेरणा विमर्श-2021)

स्वयंसेवक शब्द जुड़ने से हमारी जो जिम्मेदारी है वह पत्रकारिता के क्षेत्र में बढ़ जाती है। इसलिए पिछले सत्र में आपने देखा होगा कि कम्युनिस्टों की बात हुई थी। भारत में 26 दिसम्बर 1925 को नागपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। और 27 सितम्बर 1925 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक की स्थापना नागपुर में हुई। दोनों ही संगठन दक्षिण पंथ और वामपंथ भारत में 1925 में आए। संघ ने बच्चों में काम किया। विद्यार्थियों में काम किया, उन बाल शाखाओं से उन बालकों में जो संस्कार आए और वही बालक बड़े होकर प्रचारक के रूप में निकले। धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन गया जबकि वामपंथी कई टुकड़ों में बंट गए।

श्री शंकर सिंह जी
(सहायक संपादक, नवभारत टाइम्स)

प्रो. अखिलेश मिश्र जी
(प्राचार्य, शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद)

आज के हमारे स्वयंसेवक पत्रकारों के सामने यही सबसे बड़ा चैलेंज है कि जो सूचना का अंतरजाल है, सूचनाओं की बढ़ती सुनामी है, उससे वे कैसे निपटें। हम जानते हैं कि नॉलेज इंडस्ट्री जिसमें पत्रकारिता भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसके तीन महत्त्वपूर्ण स्तंभ है पहला सूचना, दूसरा ज्ञान और तीसरा बुद्धि। आज सूचना एक उद्योग बन गया है। पहले सूचना एक मिशन था, जन संचार एक मिशन था लेकिन आज एक उद्योग बन गया है। आज हमारे पत्रकार बंधुओं खासतौर से स्वयंसेवक पत्रकार बंधुओं के सामने यह सबसे बड़ी चुनौती है कि इस सुनामी से हम क्या निकालें, क्या छोड़ें, क्या परोसें और क्या रखें, यह बहुत बड़ी भूमिका हो गई है। स्वयंसेवक के पास सबसे बड़ा हथियार परिश्रम, मिशन और लागत है। यही नहीं, उसके पास अपना आत्मविश्वास है। राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना है और उस भावना को सक्रिय रुप में लाने के लिए उसके पास सब कुछ है।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 25 दिसम्बर, 2021 तृतीय सत्र – समय : 2.45 बजे से 4.00 बजे तक
विषय : प्रश्नोत्तर सत्र

मंचासीन अतिथि श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी जी (कार्यकारी संपादक, दैनिक जागरण), श्री अशोक श्रीवास्तव जी (सीनियर कन्सल्टिंग एडिटर डीडी न्यूज), डॉ. अनिल त्यागी जी (संयोजक, प्रेरणा विमर्श-2021)

श्री अशोक श्रीवास्तव जी
(सीनियर कन्सल्टिंग एडिटर डीडी न्यूज)

आज हम उस दौर में खड़े हैं जहां काशी विश्वनाथ धाम का देश के प्रधानमंत्री लोकार्पण कर उसे राष्ट्र को समर्पित करते हैं। आज मीडिया का भी एक बड़ा हिस्सा उसको सेलिब्रेट करता हुआ दिखता है। यह 1992 से लेकर अब तक का फर्क है। आज सोशल मीडिया भी है। बहुत से पत्रकार जिन्होंने अपने टेलीविजन चैनल पर या बहुत से पत्रकार जिन्होंने अपनी पत्रकारिता की जो परिधि को ध्यान में रखकर टीवी के सामने खुशी नहीं जताई होगी। ऐसे बहुत से लोगों ने सोशल मीडिया पर काशी विश्वनाथ धाम के बारे में खुलकर अपने दिल की बात कही। वास्तविकता तो यह है कि यह परिवर्तन हिन्दुस्तान में कुछ दशकों में आया है।

श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी जी
(कार्यकारी संपादक, दैनिक जागरण)

मेरा मानना है कि प्रत्येक पत्रकार स्वयंसेवक होता है। अगर वह सच्चा, पवित्र, ध्येयनिष्ठ, अपने कर्तव्यों के प्रति संकल्पबद्ध और प्रतिबद्ध है तो वह सच्चा पत्रकार है और सच्चा पत्रकार वही है जो स्वयं की प्रेरणा से स्व प्रेरित होकर इस व्यवसाय अथवा पेशे में आता है। ऐसे भी पत्रकार होते हैं जो असच्चे होते हैं। अनेक लोग ऐसे हैं जो पहले सिविल सर्विजेस की तैयार करते रहते हैं और कई बार प्रयास किए और इन्टरव्यू में गए लेकिन असफल हो गए। उसके बाद सोचा कि चलो अब पत्रकारिता की जाए। हम उनको सच्चा पत्रकार नहीं मानते हैं। स्वयं की प्रेरणा से जिसने इस प्रोफेशन और इस व्यवसाय को अपनाया है, वही सच्चा पत्रकार और स्वयंसेवक भी है।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 26 दिसम्बर, 2021 प्रथम सत्र समय : 11.00 बजे से 12.15 बजे तक
विषय : आपदाकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

मंचासीन अतिथि श्री कृपाशंकर जी (प्रचार प्रमुख, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड), प्रो. अरुण कुमार भगत जी (मा. सदस्य, बिहार लोकसेवा आयोग) श्री राजीव तुली जी (सदस्य, अखिल भारतीय टोली प्रचार विभाग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

नोएडा। प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के तत्त्वावधान में आयोजित प्रेरणा विमर्श-2021 के तीसरे दिन मीडिया विद्यार्थी एवं शिक्षक विमर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया। नोएडा सेक्टर 12 स्थित भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर के सभागार में 24 से 26 दिसंबर तक चलने वाले इस विमर्श की मुख्य थीम- भारतोदय : आजादी का अमृत महोत्सव थी। 26 दिसंबर को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक दर्जन से अधिक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के लगभग दो सौ मीडिया विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने तीन अलग-अलग सत्रों और विषयों पर विभिन्न ख्यातनाम मनीषी वक्ताओं के साथ विमर्श किया। तीन सत्रों के इस मैराथन विमर्श में सामयिक, सारगर्भित एवं सार्थक मंथन हुआ।

प्रो. अरुण कुमार भगत जी
(मा. सदस्य, बिहार लोकसेवा आयोग)

श्री राजीव तुली जी
(सदस्य, अ. भा.टोली प्रचार विभाग, रा. स्व. संघ)

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ मातृ भूमि तुझको अभी कुछ और भी दूं।

इसी भाव का नाम है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ। समाज में भारतीयता और भारत बोध को स्थापित करने का ही दूसरा नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। भारत की अस्मिता, विरासत, धरोहर, आत्मत्त्व, सत्त्व को प्रतिस्थापित करने की संकल्प की परिपाटी है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। आपदा की घड़ी में समाज के लिए आशा की किरण लिए देवदूत बनकर जान की परवाह किए बिना कार्य करते हैं स्वयंसेवक। करोना काल, भुज के भूकंप, भोपाल त्रासदी, सुनामी या बाढ़ अथवा चरखी-दादरी की घटना जिसमें ज्यादातर मुस्लिम समाज के लोग थे लेकिन स्वयंसेवकों ने उनकी भी सेवा की। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में करोड़ों लोगों की जानें चली गयीं, लेकिन ऐसी भयंकर आपदा में भी स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की बाजी लगा कर काम किया। राष्ट्रीय सेवा भारती के नेतृत्व में कोरोना के विरुद्ध शंखनाद हुआ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बंधित 1276 संस्थान मानवता की सेवा के लिए कूद पड़े। जहाँ पिता को अग्नि देने के लिए पुत्र नहीं था, वहाँ स्वयंसेवक थे। यही है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका।

स्वयंसेवक आपदाकाल में विषम परिस्थितियों में भी कैसे काम कर पाते हैं, ये सवाल हैं, जिसका जवाब स्वयंसेवकों को शाखाओं में मिलता है। ये संस्कार ही हैं जिनकी बदौलत, बिना किसी अपादा प्रबंधन ट्रेनिंग के ही वे कहीं भी और किसी भी समय कार्य करने की क्षमता रखते हैं। उनमें जो सनातन संस्कृति का भाव है, वही उन्हें प्रेरित करता है। स्वयंसेवक सिर्फ आपदा में ही कार्य नहीं करते बल्कि आने वाली आपदा को भांप कर उसे रोकने का भी कार्य करते हैं। पर्यावरण की बढ़ती समस्या, परिवारों में बढ़ते बिखराव, समाज से जातीय संरचना के नाम पर खत्म होता सौहार्द, ये सभी आने वाले समय में ऐसी आपदाएं है जो देश, समाज और परिवार को तोड़ सकती हैं। स्वयंसेवकों ने इस आपदा को भांपते हुए इसे रोकने का कार्य शुरू कर दिया है। परिवार प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण पर काम कर रहे ऐसे ही प्रकल्प हैं जो इस आपदा को रोकने की दिशा में तत्परता से कार्य कर रहे हैं।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 26 दिसम्बर, 2021 द्वितीय सत्र - समय : 12.45 बजे से 2.00 बजे तक
विषय : नई शिक्षा नीति और मीडिया अध्ययन

मंचासीन अतिथि डॉ. अनिल त्यागी जी (संयोजक, प्रेरणा विमर्श-2021), प्रो. संजीव शर्मा जी (मा. कुलपति, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार), प्रो. नागेश्वर राव जी (मा. कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रो. संजीव शर्मा जी
मा. कुलपति,
(महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार)

भारत की नयी शिक्षा नीति राष्ट्रीय शिक्षा नीति है। पहले शिक्षा नीति व्यक्ति को ध्यान में रखकर बनती थी। यह पहली बार हुआ है की शिक्षा की नीति राष्ट्र को ध्यान में रखकर बनी है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति विषयों के कृत्रिम सीमाओं के पार है। बहुविषयकता और अनुशासनात्मकता के साथ भारत केन्द्रित बड़ी परिधि और आयाम को तय करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति अवसर के अनेक द्वार खोलती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मीडिया को वर्ल्ड कम्युनिकेशन थ्योरी के साथ इंडियन कम्युनिकेशन थ्योरी के सिद्धान्त के साथ ज्ञान, चिंतन और समीक्षा के अवसर प्रदान करती है। भारत की नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति और परम्पराओं में रहते हुए आधुनिकता की राह पर, भारत को करीब से दर्शन करते हुए हमें विश्व गुरु बनने में सक्षम करती है ताकि हम भारत को भारत की दृष्टि से देख सकें और अपनी अभिव्यक्ति और लेखन को और समृद्ध कर सकें ।

प्रो. नागेश्वर राव जी
मा. कुलपति
(इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को स्वयं प्लेटफार्म के साथ अपनाना बेहद आसान है। इसके अंतर्गत देश के जाने-माने शिक्षाविदों द्वारा बनाये 300 कोर्सेज हैं, जिसमें सारे विषय समाहित हैं। व्यक्ति के इन्नोवेटिव और इफेक्टिवनेस के लिए बहुआयामी शिक्षा पद्धति जरूरी है। साल में दो बार जनवरी और जुलाई में नि:शुल्क पंजीयन होता है। अब तक 2 करोड़ लोग अपना पंजीयन करवा चुके हैं। आप कोई भी एक कोर्स जो आपके प्रासंगिक है, कर सकते हैं। दिसंबर और जून में परीक्षा भी होती है जिसकी बहुत कम फीस लगती है। एनटीए द्वारा इस परीक्षा का आयोजन होता है। सर्टिफिकेट एकदम प्रमाणिक और हर जगह मान्य है। स्टडी मटेरियल ऑनलाइन उपलब्ध है। वह वीडियो फॉर्मेट में भी होता है। कुछ शंकाओं को दूर करने के लिए डिस्कशन फोरम है और यहाँ आयु क्वालिफिकेशन और माध्यम की कोई प्रतिबद्धता नहीं है। वैश्विक परिवेश में अपने आप को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत इसका भरपूर इस्तेमाल कीजिये।

पत्रकार एवं लेखक विमर्श कार्यशाला 26 दिसम्बर, 2021 द्वितीय सत्र समय : 2.45 बजे से 4.00 बजे तक

विषय : आत्मनिर्भरता में मीडिया की भूमिका

मंचासीन अतिथि डॉ. अनिल त्यागी जी (संयोजक, प्रेरणा विमर्श-2021) श्री हर्षवर्धन त्रिपाठी जी (वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रगतिशील विचारक), प्रो. सच्चिदानंद जोशी जी (सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी कला केन्द्र संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
डॉ. अनिल निगम जी (वरिष्ठ पत्रकार)

प्रो. सच्चिदानंद जोशी जी
सदस्य सचिव
(इंदिरा गांधी कला केन्द्र संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

अगर आपने भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पूरा का पूरा ड्राफ्ट देखा हो तो आपको मालूम पड़ेगा कि भारतीय ज्ञान परम्परा पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा पर जोर इसलिए दिया गया है क्योंकि हमें मालूम है कि जिस भारत और भूमि का जिक्र भाई हर्षवर्धन कर रहे थे, उस भूमि पर पिछले तीन-चार हजार साल की एक वैचारिक अधिष्ठान की जो प्रतिष्ठा है, उसके कारण हम भारत हैं। हम पिछले 75 सालों की स्वतंत्रता के कारण भारत नहीं हैं। इस भ्रम से बहुत दूर होना पड़ेगा। भारत की गुलामी का इतिहास एक हजार वर्ष का है, उस गुलामी के बाद हम 1947 की स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं। हम भ्रम में रहते हैं कि आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं यानि हम इस नये भारत की कोई बहुत बड़ी खोज कर रहे हैं। दरअसल, यह नया भारत नहीं है। यह साढ़े तीन-चार हजार साल पुराना भारत है। इसकी सीमाएं विष्णु पुराण में भी हैं।

श्री हर्षवर्धन त्रिपाठी जी
(वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रगतिशील विचारक)

यह जो भारतोदय प्रेरणा विमर्श - 2021 तीन दिनों से चल रहा है, आज ऐसे विमर्श की बहुत आवश्यकता है। आत्मनिर्भरता तो भारत के मूल में है। हमारे यहां बच्चे के संस्कार के तौर पर उसके जन्म के साथ उसको आत्मनिर्भर होना सिखाया जाता है। लेकिन संयोग या दुरयोगवश हम अलग-अलग समय में ऐसे कालखण्डों से गुजरे और उसके बाद 1947 के बाद आज का भारत। भारत के संविधान के दायरे में चलने वाला लोकतांत्रिक भारत। उसमें बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में हमें लगता है कि ऐसा तो कभी भारत में था ही नहीं। ऐसा हो भी नहीं सकता। इसकी बात करने वाले वे लोग हैं जिनके पास बताने के लिए कुछ नहीं है। जो कहते हैं कि हमारी संस्कृति बड़ी शानदार थी, लेकिन जब पूछो तो बता नहीं पाते हैं। अच्छी बात यह है कि जो दुनिया का सबसे बड़ा संकट का काल गुजरा, उसमें भारत ने दुनिया को बता दिया कि आत्मनिर्भर होना क्या होता है, आत्मनिर्भर होने की पहचान क्या है और आत्मनिर्भरता के स्तर को कैसे हासिल किया जाता है।

प्रेरणा विमर्श -2021

भारतोदय

आजादी का अमृत महोत्सव

समापन समारोह

26 दिसम्बर, 2022

आजादी के 75 वें साल में हम प्रवेश कर रहे हैं। इसका क्या हित है, क्या महत्त्व है, क्या महत्त्व सिर्फ इतना है कि हम स्वाधीनता प्राप्ति का जश्न मनाकर उसी तरह बैठ जाएं जैसे 15 अगस्त 1947 को लाल किला पर ध्वजारोहण के बाद हमने मान लिया कि सब कुछ ठीक हो गया। यह वर्ष भारत के लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि लम्बे वैचारिक संघर्ष के बाद एक परिवर्तन हुआ। जिस वैचारिक संघर्ष को लेकर हम लगभग 100 वर्षों से यात्रा कर रहे हैं, उसका प्रतिबिम्ब समाज में अवश्य दिखाई पड़ रहा है। उस वैचारिक यात्रा के प्रतिबिम्ब में स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को तरासना, उसके इतिहास पर प्रकाश डालना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जब कोई काम हम विलासितापूर्ण करते हैं तो उस काम की उपलब्धि तत्कालिकता में खो जाती है। जब कोई कार्य हम संघर्ष के साथ करते हैं, वह कार्य लम्बे समय तक याद किया जाता है। भारत की जो परम्परा रही है, वह परम्परा तथ्य और तर्क की परम्परा रही है। विमर्श की यह परम्परा भारत को उस वैचारिक स्थान पर रखती है जिसका दुनिया में कोई समानान्तर नहीं है।

स्वाधीनता के आंदोलन में छोटे बच्चों को दुर्घटनावश दहशत होने के कारण या उस भीड़ में शामिल होने के कारण गोलियां लगीं। दुनिया के इतिहास में भारत को छोड़कर एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जब शैशवावस्था में हजारों की भीड़ का नेतृत्व छोटी अवस्था के बच्चे कर रहे थे। उड़ीसा का बाजीराउत बानर सेना का अध्यक्ष बना। नाविक का बेटा था। किसी राजघराने से किसी महल से नहीं आता था। उसे यह कार्य मिला था कि नदी के किनारे चौकीदारी करे कि ब्रिटिश सेना आर-पार न कर सके। ऐसी ही 300 ब्रिटिश सेना की दास्तां हैं। वे पार करना चाहते थे। वे नाव का प्रयोग करना चाहते थे। बाजीराउत अड़ गया। पहले बालक समझकर वे आग्रह करते रहे। और बालक के उस अवरोध को दुराग्रह समझते रहे परन्तु बालक तो सेनानी था। वह चिल्लाया, लोगों तक खबर भेजने की कोशिश की। उन्हें रोका, जब तक लोग

नहीं आए तब तक रोककर रखा। अन्त में उसे शहादत मिली। यह केवल एक घटना नहीं है जिस उम्र के बच्चे को हम सड़क पार कराते हैं, उसी उम्र में तिलेस्वरी वरुवा को 6 हजार प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व असम में करती हुई शहादत मिली। वह एक पुलिस स्टेशन पर ध्वज फहराने जा रही थी। प्रदर्शन के आगे वह नेतृत्व कर रही थी। तिरंगा झण्डा उनके हाथ में था। ये दोनों बच्चे 12 साल के थे। बंगाल के कोमिनर जिले में एक डिस्टिक मजिस्ट्रेट का अत्याचार इतना बढ़ चुका था। उसके अत्याचार से देश भक्त परेशान थे। उस अत्याचारी से बदला लेने के लिए 14 साल की सुनेति चौधरी अपनी 20 वर्षीय मित्र शांति घोष के साथ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास पहुंची, मिलना कठिन था। दोनों चूंकि महिला थी, इसलिए उनकी यह अपील उन तक पहुंच गई। उन दोनों ने कहा कि स्वीमिंग के लिए तैराकी के लिए किसी स्वीमिंग पूल में तैरने के लिए उनकी अनुमति चाहिए। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने उनसे मिलने का अवसर दिया। शांति घोष बात कर रही थी। सुनेति चौधरी ने रिवालवर निकाला, उसी वक्त उसे हताहत कर दिया। फिर फरार हो गई। उनकी गिरफ्तारी हुई और कोर्ट ने जब उन्हें शहादत नहीं दी, फांसी की सजा नहीं दी तो उन्होंने इस पर अफसोस जाहिर किया। यह 14 दिसम्बर 1931 की घटना है। उन्हें आजीवन कारावास मिला। लेकिन इसी बीच द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ। 1938 में उन्हें जेल से छुटकारा मिला।15 साल का शिरीष कुमार मेहता महाराष्ट्र में 9 सितम्बर 1942 को संघर्ष करते हुए शहीद हुआ। 17 साल की कनक लता बरुआ असम में शहीद हुई और हम सब जानते हैं कि खुदीराम बोस 18 साल के थे जब शहीद हुए। यह जो संघर्ष का सिलसिला चला, वह सिर्फ घटना मात्र नहीं है। भारत की सांस्कृतिक चेतना ने भारत के भूगोल, संस्कृति, इतिहास और विरासत को भारत के भविष्य का एक पंचामृत बना दिया। इस सांस्कृतिक चेतना ने बालक, वृद्ध, गरीब सहित सभी को भारत मां की मुक्ति और स्वाधीनता के लिए समर्पित कर दिया।

मधुसूदन दादू
अध्यक्ष, प्रेरणा विमर्श-2021

आप सभी इस प्रेरणा विमर्श-2021 में उपस्थित रहे, इसमें आपने भाग लिया और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबको इसका निश्चित ही लाभ मिला होगा। फरवरी 2020 में प्रेरणा भवन में हमने तय किया था प्रेरणा विमर्श -2020। और उसी विमर्श की स्मारिका का विमोचन भी अभी आपके सामने हुआ। सभी की इच्छा थी कि प्रेरणा विमर्श को दोबारा वर्ष 2021 में किया जाए। वास्तव में इस पर दो बार पहले विचार भी किया गया। परन्तु कोरोना के चलते हमें स्थगित करना पड़ा। लेकिन बड़े हर्ष का विषय है कि इस कैलेण्डर इयर के समाप्त होते-होते दिसम्बर में प्रेरणा विमर्श-2021 सबके साथ मिलकर हम कर पाए। राष्ट्र के उत्थान में मीडिया की विशेष भूमिका रहती है। हमारी सोच भारतीय सोच है और मीडिया में वह कितनी गई है, उसको देखने व समझने के लिए ही यहां पर विमर्श होता है। इससे हमें पता चलता है कि राष्ट्र और समाज के उत्थान में मीडिया का क्या सहयोग है, क्या उसका स्वरूप है। इस प्रकार के विमर्श में पत्रकार, विचारक, विद्वान, लेखक, सोशल मीडियाकर्मी, अध्यापक और छात्र आदि सब मिलकर राष्ट्र हित में मंथन करते हैं।

अंणज कुमार त्यागी
अध्यक्ष, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

तीन दिवसीय प्रेरणा विमर्श-2021 के समारोह को हमनें विभिन्न कार्यक्रमों के अंर्तगत पूर्ण करने का प्रयास किया। हमारा यह प्रयास था कि आप सभी के सम्मुख इस प्रकार के वक्ताओं को ला सकें, जिन्हें अपने-अपने विषय का गूढ़ ज्ञान हो और आपकी जितनी भी शंकाए हैं, उन्हें निर्मूल करे सकें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम अपने इस ध्येय में काफी हद तक सफल हुए हैं। इस तीन दिन के अनुष्ठान को सफल बनाने हेतु एक कोर कमेटी ने पिछले कुछ दिनों से निरंतर प्रयास किया। अपनी समय सीमा को न देखते हुए, अपने समस्त अन्य कार्यक्रमों में से बहुमूल्य समय निकालते हुए, सभी लोगों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और प्रेरणा विमर्श 2021 कार्यक्रम समारोह को सफल बनाया।

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव - प्रेरणा विमर्श -2021 भारतोदय : आजादी का अमृत उत्सव अनुष्ठान के दौरान प्रेरणा चित्र भारती ऑनलाइन फिल्मोत्सव का आयोजन भी किया गया। जिसमें पर्यावरण, राजनैतिक जागरूकता एवं नागरिक भाव, भारत के राम, आपदा में अवसर, स्वदेश, वोकल फॉर लोकल, शिक्षा एवं स्वास्थ्य, महिला अधिकार, राष्ट्रीय सुरक्षा, भारतीय संस्कृति एवं मूल्य, सामाजिक समरसता, भारतीय धरोहर/विरासत एवं आत्मनिर्भर भारत जैसे विषयों पर 10 मिनट तक की डाक्यूमेंट्री और लघु फिल्में मंगायी थीं जिसमें पत्रकारिता के विभिन्न संस्थानों, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा भेजी गईं, सभी 44 फिल्मों को दर्शकों को ऑनलाइन दिखाया गया।

फिल्मोत्सव में प्रथम स्थान चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय के छात्रों सूर्य प्रताप, भरत एवं कावेरी द्वारा बनायी गई फिल्म 'मोबाइल के मारे' को मिला, द्वितीय स्थान पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के छात्र राजू श्रीवास्तव द्वारा बनायी गयी फिल्म 'दान' रही। तृतीय स्थान पर चंडीगढ विश्वविद्यालय के छात्र वैभव बिष्ट द्वारा बनायी गई फिल्म 'हिन्दी हैं हम' रही। अमेटी विश्वविद्यालय की छात्रा सुहानी त्यागी की फिल्म 'ठंड का भूत' एवं यंग फिल्म मेकर की स्वेता दत्ता द्वारा बनाई गई फिल्म 'विलेज ऑन वील्स' को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। फिल्मोत्सव में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को ऑनलाइन प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

श्री उमेश उपाध्याय जी को साहित्य
भेंट करते हिमांशु गोयल जी

श्री दिव्य सोती जी को साहित्य
भेंट करते सचिन त्यागी जी

श्री विकाश सारस्वत जी को साहित्य
भेंट करते हिमांशु जी

श्री प्रफुल्ल केतकर जी को साहित्य
भेंट करते अंकुर अग्रवाल जी

श्री रोहित कौशल जी को साहित्य
भेंट करते नरेन्द्र त्यागी जी

श्री भुवन भास्कर जी को साहित्य
भेंट करते विपिन जी

श्री नरेन्द्र भदौरिया जी को साहित्य
भेंट करते प्रीतम जी

श्री श्याम किशोर जी को साहित्य
भेंट करती मोनिका चौहान जी

श्री शंकर सिंह जी को साहित्य
भेंट करती अनुपमा अग्रवाल जी

प्रो. अखिलेश मिश्र जी को साहित्य भेंट करते मनीष जैन जी

श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी जी को साहित्य भेंट करते मनीष गुप्ता जी

श्री अशोक श्रीवास्तव जी को साहित्य भेंट करते नागेन्द्र वार्ष्णेय जी

प्रो. अरुण कुमार भगत जी को साहित्य भेंट करते प्रो. प्रशांत कुमार जी

श्री राजीव तुली जी को साहित्य भेंट करते डॉ. मनोज श्रीवास्तव जी

प्रो. नागेश्वर राव जी को साहित्य भेंट करते डॉ. राकेश दुबे जी

प्रो. संजीव शर्मा जी को साहित्य भेंट करते रमन चावला जी

श्री हर्षवर्धन त्रिपाठी जी को साहित्य भेंट करती डॉ. मुक्ता मर्तोलिया जी

प्रो. सच्चिदानंद जोशी जी को साहित्य भेंट करते डॉ. नीरज करण जी

प्रो. राकेश सिन्हा जी को साहित्य
भेंट करते प्रो. हरेन्द्र सिंह जी

श्री सुभाष सिंह जी को साहित्य
भेंट करते डॉ. अनिल निगमजी

श्री मधुसूदन दादू जी को साहित्य
भेंट करते बी.के. गुप्ता जी

श्री अणंज त्यागी जी को साहित्य
भेंट करते प्रकाश श्रीवास्तव जी

प्रेरणा
जनसेवा न्यास

प्रेरणा शोध
संस्थान न्यास

केशव संवाद
पत्रिका

प्रेरणा जनसंचार
एवं शोध संस्थान

प्रेरणा जन सेवा न्यास

मीडिया मॉनिटरिंग पत्रकारिता का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रेरणा जन सेवा न्यास के अंतर्गत प्रेरणा मीडिया उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड से संबंधित प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक, वेब एवं सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग करता है। संस्थान एडिटोरियल पॉलिसी के अनुसार तात्कालिक एवं समसामायिक कंटेंट हेतु विभिन्न प्रकार के समाचार एकत्र करता है और उन पर रिसर्च करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य तथ्यात्मक और सही समाचार लोगों तक पहुंचाना है। इस क्षेत्र में संस्थान द्वारा डेली समाचार बुलेटिन निकाला जाना एक सार्थक प्रयास है। जिसमें प्रतिदिन के प्रमुख समाचारों को लिया जाता है। जिसके माध्यम से समाज को सही और तथ्यों के साथ समाचार दिखाया जाता है। संस्थान में मीडिया मश्वनिटरिंग, प्रेरणा संवाद न्यूज, प्रेरणा संवाद वेबसाइट, विरासत कार्यक्रम, सोशल मीडिया के अंतर्गत फेसबुक, यू-ट्यूब, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से संवाद किया जाता है। इसके अतिरिक्त संस्थान में समृद्ध पुस्तकालय, इलेक्ट्रॉनिक रिपोर्टिंग के उन्नत उपकरण, एफसीपी वीडियो एडिटिंग रूम, स्टूडियो आदि उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त वातानुकूलित सेमिनार हॉल है जिसमें निरंतर अकादमिक गतिविधियां संचालित की जाती हैं।

विरासत

प्रेरणा सोशल मीडिया

@prernasmedia

Prerna Media

@prernasmedia

@PrernaMedia

Edit profile

Prerna Media

@PrernaMedia

राष्ट्र, समाज, संस्कृति, भाषा, विमर्श, विश्लेषण, विचार, इतिहास.

Translate bio

भारत prernanews.in Joined October 2017

43 Following **6,053** Followers

Tweets | Tweets & replies | Media | Likes

Pinned Tweet

Prerna Media @PrernaMedia · Dec 28, 2021

नए लोगों को संघ में क्या मिलेगा?

#Rss #DrMohanBhagwat #PrernaMedia

Website

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

प्रेरणा शोध संस्थान एक सार्वजनिक ट्रस्ट है जिसका गठन 24-04-2017 को, चरित्र निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण तथा मीडिया और प्रशिक्षण के क्षेत्र में राष्ट्रवादी और सामाजिक मूल्यों को विकसित करने हेतु सूचना व शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से किया गया।

आज का युग तात्कालिक सूचनाओं का युग है। विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति के परिणामस्वरुप दुनिया एक आंगन के रूप में परिवर्तित हो गयी है। ट्रस्ट के व्यापक उद्देश्यों में विश्व के हर कोने में आयोजन और घटनाओं के बारे में सटीक, त्वरित और विश्वसनीय जानकारी का आदान-प्रदान करना, पत्रकारिता के क्षेत्र में राष्ट्रीयता और सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना, भारतीय संस्कृति और मान्यताओं के पुनर्निर्माण में स्वदेशी अवधारणाओं के विचारों का विकास और प्रसार, सामाजिक सद्भाव का विकास और संवर्धन, मीडिया संभाषण के माध्यम से सामाजिक मूल्यों और आम जनता में नैतिकता को बढ़ावा देना सम्मिलित है।

संस्थान पत्रकारिता कार्यशाला, नागरिक पत्रकारिता कार्यशाला, पत्रकार सम्मान एवं प्रेरणा विमर्श के आयोजन के अलावा समाज के विभिन्न वर्गों के जरूरतमंद छात्रों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिसमें नि:शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण, लेखन कौशल, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी आदि विषय शामिल हैं।

निःशुल्क प्रशिक्षण

पत्रकार सम्मान

वेबिनार

AM KHAN
Anita choudhary
Prof. Bhagwati Prakash Sharma
Kripa Shankar
Dr.Anjana Singh Sengar
Ashwini Upadhyay
Farha Faiz
Ananj Kumar
Chandra Bhushan Singh
Gen VK Singh
AJAY SHARMA
Anita choudhary
Prof. Geeta Bhatt

केशव संवाद पत्रिका

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत, भारतीय संस्कृति परम्परा एवं भारतीय मूल्यों को समाहित करने वाली पत्रिका 'केशव संवाद' सन् 2000 से मेरठ से प्रकाशित होती थी। परन्तु जुलाई 2016 से यह पत्रिका प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा द्वारा निरंतर प्रकाशित हो रही है। राष्ट्रवादी विचारधारा से अनुप्राणित पत्रकारिता को समर्पित प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड समेत पूरे देश की एकमात्र ऐसी संस्था है जो विभिन्न प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का नि:शुल्क आयोजन करती आ रही है। प्रत्येक माह के अंक में विषय विशेष को लेकर शोधपरक सामग्री प्रकाशित की जाती है तथा पत्रिका का हर तीन माह में विषय निर्धारित विशेषांक भी प्रकाशित होता है।

पत्रिका के विशेषांकों का विमोचन लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी, पूर्व राज्यपाल श्री राम नाईक जी, राज्यसभा सांसद प्रो. राकेश सिन्हा जी, पूर्व राज्यसभा सांसद श्री आर. के सिन्हा जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्रीमान दत्तात्रेय होसबले जी, अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख श्रीमान नरेन्द्र ठाकुर जी, गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा जी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के कुलपति प्रो नरेंद्र तनेजा जी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. के. जी सुरेश जी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति कर चुके हैं।

केशव संवाद

केशव संवाद
अन्त्योदय की ओर
केशव संवाद
केशव संवाद
केशव संवाद
केशव संवाद
भारत
केशव संवाद
राष्ट्रीयता
केशव संवाद

केशव संवाद

केशव संवाद
सुशासन के नायक

केशव संवाद
पत्रकारिता

प्रेरणा शोध संस्थान

प्रेरणा जनसंचार एंव शोध संस्थान

नोएडा के सेक्टर-62 स्थित प्रेरणा जनसंचार एवं शोध संस्थान न्यास ने अपनी स्थापना की अल्पकालिक यात्रा में ही जनसंचार व पत्रकारिता के प्रशिक्षण क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है। देश के ख्यातिलब्ध मीडिया पेशेवर तथा मीडिया शिक्षण क्षेत्र में शीर्षस्थ संस्थानों में सेवारत विशेषज्ञों के निर्देशन में संस्थान पत्रकारिता एवं जनसंचार को नई ऊंचाईयां देने में जुटा है। समाज के हर वर्ग को राष्ट्रीय मुद्दों, सामाजिक सरोकारों तथा रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने को प्रयासरत संस्थान में मीडिया से सम्बद्ध व बौद्धिक गतिविधियां निरन्तर चलती रहती हैं। नागरिक पत्रकारिता तथा सोशल मीडिया के समुचित उपयोग के द्वारा जनजागरण तथा जनसहभागिता संस्थान का प्रमुख उद्देश्य रहा है। संस्थान शिक्षण, प्रशिक्षण तथा संवाद को समर्पित रहा है। संस्थान सूचना एवं तकनीकी से जुड़े क्षेत्र में कौशलयुक्त प्रशिक्षण प्रदानकर प्रशिक्षणार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने को प्रयासरत है। प्रशिक्षणार्थियों में अभिभाषण कला, मंच संचालन, विविध सम-सामयिक विषयों पर मजबूत पकड़ को दृष्टिगत रखते हुए भाषण, सेमिनार, कार्यशालाएं, पत्रकार प्रतिभा खोज प्रतियोगिता, पत्रकारिता विद्यार्थी संगोष्ठी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, परिचर्चा, साक्षात्कार तथा प्रेस कांफ्रेंस अभ्यास जैसी गतिविधियों का वर्ष भर आयोजन किया जाता है।

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

(मा. दत्तात्रेय होसबले जी, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

(मा. अरुण कुमार जी, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

(मा. ओम बिरला जी, लोकसभा अध्यक्ष)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

(मा. योगी आदित्यनाथ जी, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

(मा. रामनाईक जी, पूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

मा. मनमोहन वैद्य जी
सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

मा. सुनील आम्बेकर जी
अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख, रा.स्व.संघ

मा. नरेन्द्र ठाकुर जी
अ. भा. सह प्रचार प्रमुख, रा.स्व.संघ

मा. आलोक कुमार जी
अ. भा. सह प्रचार प्रमुख, रा.स्व.संघ

मा. इन्द्रेश कुमार जी
सदस्य, अखिल भारतीय टोली, रा.स्व.संघ

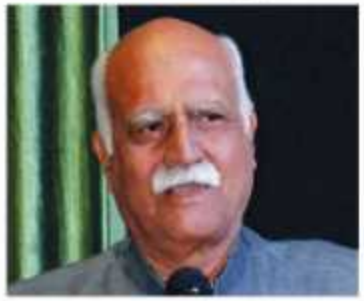

मा. अशोक बेरी जी
सदस्य, अ. भा. टोली, रा.स्व.संघ

मा. जे. नन्दकुमार जी
अखिल भा. संयोजक, प्रज्ञा प्रवाह, रा.स्व.संघ

मा. दिनेश कुमार जी
पूर्व संगठन महामंत्री, अ. भा. वि. हि. प.

मा. रामलाल जी
अ. भा. सम्पर्क प्रमुख, रा.स्व.संघ

मा. अजिंक्य कुलकर्णी जी
अ. भा. सोशल मीडिया प्रमुख, रा.स्व.संघ

मा. सूर्यप्रकाश टोंक जी
क्षेत्र संघचालक, पश्चिमी उत्तर प्रदेश

मा. धनीराम जी
क्षेत्र सेवा प्रमुख, पश्चिमी उत्तर प्रदेश

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

प्रो. अरुण कुमार भगत
मा. सदस्य बिहार लोकसेवा आयोग
पटना, बिहार

श्री नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

श्री उमेश उपाध्याय
रिलायंस इंडस्ट्रीज मीडिया के
अध्यक्ष एवं निदेशक

श्री अशोक कुमार सिन्हा
वरिष्ठ पत्रकार

श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
कार्यकारी संपादक
दैनिक जागरण समूह

श्री प्रफुल्ल केतकर
संपादक, ऑर्गनाइजर

श्री सुरेश चव्हाण के
चेयरमैन, सुदर्शन टी.वी. चैनल

श्री उदय कुमार सिन्हा
समूह संपादक, अमर उजाला

श्री आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

श्री राहुल महाजन
(पूर्व प्रधान संपादक, राज्य सभा टीवी)

श्री दिव्य सोती
(स्तम्भ लेखक, एवं टीवी पैनलिस्ट)

श्री प्रतीक त्रिवेदी
(वरिष्ठ संपादक, नेटवर्क 18)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

श्री अशोक श्रीवास्तव
(सीनियर कन्सल्टिंग एडिटर डीडी न्यूज)

श्री हर्षवर्धन त्रिपाठी
(वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रगतिशील विचारक)

सुश्री मधु पूर्णिमा किश्वर
(वरिष्ठ पत्रकार और आईसीएसएसआर की नेशनल प्रोफेसर)

श्रीमती अनुराधा प्रसाद
प्रधान संपादक, न्यूज 24 चैनल

श्री विकास सारस्वत
(स्तम्भ लेखक, स्वराज मैग्जीन/ दैनिक जागरण)

श्री हितेश शंकर
(संपादक, पांचजन्य)

श्री भुवन भास्कर
(सहायक उपाध्यक्ष, मीडिया एवं संचार, एनसीडीईएक्स)

श्री शंकर सिंह
(सहायक संपादक, नवभारत टाइम्स)

श्री आशीष जोशी
(पूर्व मुख्य कार्यकारी एवं प्रधान संपादक लोक सभा टीवी)

श्री आनंद नरसिम्हन
(कार्यकारी संपादक नेटवर्क 18)

श्री मनोज वर्मा
(वरिष्ठ एंकर, लोक सभा टीवी)

श्री राहुल रोशन
(सीईओ, ऑप इंडिया)

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
पूर्व कुलपति, गौतमबुद्ध विवि.
ग्रेटर नोएडा

प्रो. रजनीश शुक्ल
कुलपति, म.गां. अ. हिन्दी विवि.
वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. संजीव शर्मा
पूर्व कुलपति, म.गां. केन्द्रीय विवि.
मोतिहारी, बिहार

प्रो. एम.पी. दुबे
पूर्व कुलपति, यूपीआरटीओयू
प्रयागराज

प्रो. बल्देव भाई शर्मा
कुलपति, कुशाभाई ठाकरे विवि.
रायपुर, छत्तीसगढ़

प्रो. नागेश्वर राव
कुलपति, इंदिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त
विवि. दिल्ली

प्रो. नरेन्द्र तनेजा
पूर्व कुलपति, चौधरी चरणसिंह विवि. मेरठ

प्रो. आर. पी. सिंह
कुलपति, केशवानंद कृषि
विवि., बीकानेर

प्रो. के. जी. सुरेश
कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी
विवि. भोपाल

प्रो. जगदीश उपासने
पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी
विवि. भोपाल

प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह
पूर्व कुलपति, यूपीआरटीओयू
प्रयागराज

प्रो. बी. के. कुठियाला
पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी
विवि. भोपाल

प्रेरणा परिवार के विशिष्ट अतिथि

स्व. मृदुला सिन्हा
पूर्व राज्यपाल, गोवा

प्रो. राकेश सिन्हा
सदस्य राज्यसभा

श्री आर. के. सिन्हा
पूर्व सदस्य, राज्यसभा

श्री तरुण विजय
पूर्व सदस्य, राज्यसभा

श्री शिवप्रकाश
राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री, भाजपा

डॉ. महेश शर्मा
पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद
लोकसभा (भारतीय जनता पार्टी)

ब्रिगेडियर (रिटायर्ड) डॉ. बी.डी. मिश्रा
राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश

श्री स्वतंत्र देव सिंह
जल शक्ति और बाढ़ नियंत्रण मंत्री
उत्तर प्रदेश

डॉ. महेन्द्र सिंह
पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश

श्रीमती अनुपमा जायसवाल
विधायक, बहराइच

श्रीमती स्वाती सिंह
पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश

श्रीमती विमला बाथम
अध्यक्ष, महिला आयोग, उत्तर प्रदेश

पर्यावरण संरक्षण

प्रेरणा भवन, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा